RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26

शिव आमंत्रण

महा शिवरात्रि विशेष 2025

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण | वर्ष-12, हिन्दी (मासिक), फरवरी 2025

सृष्टि के महापरिवर्तन का समय : 88 वर्ष पूर्व इस धरा पर परमात्मा का हो चुका है दिव्य अवतरण

आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन का महाकुंभ

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

अध्यात्म भारतीय संस्कृति की धरोहर है। इस धरोहर को विश्व फलक पर प्रतिष्ठित करने में महाकुंभ प्राण वायु के रूप में चेतना को त्याग-तप-संयम और साधना के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रबल प्रेरणा देता है। महाकुंभ में ऊंच-नीच, जात-पात का भेद भुलाकर जहां हम जीवन के महान लक्ष्य की ओर बढ़ने के प्रेरित होते हैं, वहीं साधु-संत-महात्माओं की दिव्य वाणी का अमृतपान आत्मा को झंकृत कर देता है। इसी आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन का महामेला, महाकुंभ माउंट आबू में पिछले 88 वर्षों से जारी है। अध्यात्म के इस महाकुंभ में डुबकी लगाकर लाखों नर-नारी विषय वैतरणी नदी को पार करते हुए मनुष्य से देवत्व के महान लक्ष्य के साथ पूरे आत्म विश्वास, त्याग-तप, संयम, सेवा और साधना के पथ पर अग्रसर हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इसी नियम के तहत हर पांच हजार वर्ष में एक बार आत्मा-परमात्मा का महामिलन, मंगल मिलन और दिव्य मिलन का मेला लगता है। वर्तमान में यह वही समय संगमयुग चल रहा है। आप भी इस महामिलन के साक्षी बनकर अपने जीवन को दिव्य, महान, प्रेरक और आदर्श बना सकते हैं।

स्वर्णिम भारत का स्वप्न ले रहा है आकार

आज हर मन में स्वर्णिम भारत की कल्पना है लेकिन सवाल ये है कि आएगा कैसे? परमात्मा कहते हैं कि जब प्रत्येक मनुष्य दिव्यगुणों से संपन्न और मनुष्य आत्माएं तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएंगी तो इस धरा पर स्वर्णिम भारत आएगा। स्वर्णिम भारत में चहुंओर सुख-शांति, आनंद, पवित्रता होगी, देवी-देवताओं की ऐसी दुनिया जहां हर नर-नारी 16 कला संपूर्ण और संपूर्ण निर्विकारी होगी। स्वर्णिम दुनिया ऐसी पवित्र, धन-संपदा से संपन्न होगी। इस धरा पर स्वर्णिम भारत को साकार करने के दिव्य और महान लक्ष्य के साथ पिछले 88 वर्ष से ब्रह्माकुमारीज़ सेवा में समर्पित है। लक्ष्य बड़ा है लेकिन असाध्य भी नहीं है। तीनों लोकों के स्वामी, त्रिनेत्री, ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति परमात्मा के मार्गदर्शन में इसकी नींव रखी जा रही है।

5000 वर्ष में संगमयुग में एक बार होता है आत्मा-परमात्मा का महा मिलन

स्वर्णिम भारत की रखी जा रही नींव, फिर से आएगी देवी-देवताओं की सनातन संस्कृति

'संगम' युग में साधना दिलाएगी पुण्य फल

परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों! कल्प-कल्पानुसार वर्तमान में कलियुग के अंत और सतयुग के आदि का यह समय संगमयुग चल रहा है। इसमें जो मनुष्य आत्मा सर्व संबंधों, पदार्थों, वस्तुओं से अपना बुद्धि योग तोड़कर एक मुझ परमात्मा में स्थित करती है, मनमनाभव के मंत्र से राजयोग की विधि द्वारा निरंतर मुझे याद करती है तो मैं उसे सर्व बंधनों, पापों और दुखों से मुक्त कर देता हूं। आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा देकर कल्याण करता हूं। बदले में 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की राजाई प्रदान करता हूं। मेरे बच्चों इस समय को पहचानो और मेरी यथार्थ पहचान कर निरंतर एक मुझ परमात्मा को याद करो।

ऐसे रखी जा रही है नवयुग की आधारशिला...

नवसृजन का कार्य एक प्रक्रिया के तहत ईश्वरीय संविधान के अनुसार होता है। जैसे एक विद्यार्थी विद्या अध्ययन की शुरुआत पहली कक्षा से करता है और फिर वह साल दर साल आगे बढ़ते हुए एक दिन विशेष योग्यता प्राप्त कर न्यायाधीश, आईएएस, सीए, पायलट, शिक्षक, वैज्ञानिक और पत्रकार बनता है। इसी तरह निराकार परमात्मा ईश्वरीय संविधान के तहत शिक्षा देकर स्वर्णिम दुनिया, नवयुग के स्थापना की आधारशिला रखते हैं। स्वयं परमात्मा ही नर से श्रीनारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने के लिए राजयोग ध्यान सिखाते हैं। राजयोग को चार मुख्य विषय (ज्ञान, योग, सेवा और धारणा) में बांटा गया है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आज लाखों लोग अपना दाखिला कराकर पढ़ाई को पूरी लगन, मेहनत, त्याग और तपस्या के साथ पढ़ रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप मानव के व्यक्तित्व में दिव्यगुण, विशेषताएं और दिव्य शक्तियां स्वाभाविक रुप से झलकने लगती हैं। चार विषयों में प्रवीण होने के बाद आत्मा अपनी संपूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर लेती है।

आध्यात्मिकता का मतलब धार्मिक होना या सांसारिक कार्य का त्याग करना नहीं है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने भीतर की शक्ति को पहचानकर अपने आचरण और विचारों में शुद्धता लाना है। मेरी कामना है कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान भारत की आध्यात्मिक पहचान को और मजबूत बनाने का काम करें।

- द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत

ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की अध्यात्म का विश्वभर में संदेश पहुंचाने में बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुन: नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है।

- राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा...

शिवपुराण के कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है- मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इसका यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दु:ख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि शिवरात्रि में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रुप से समझा जाए तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है।

परमात्मा शिव ही त्रिदेव के रचयिता त्रिमूर्ति हैं...

गीता में परमात्मा ने कहा है कि मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

गीता में भगवान के महावाक्य हैं 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सतधर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स तू मन को मुझ में लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। परमात्मा कहते हैं- वत्स ! तू मन को मुझ में लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स ! तू मन को मुझमें लगा। जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता है, उसी तरह आत्मा पर कई जन्मों से चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, सतत् परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों की मौल धुलती जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा, परमात्मा की शक्ति से संपूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

श्रीमद्भ भगवत गीता से लेकर महाभारत, शिवपुराण, रामायण, यजुर्वेद, मनुस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहां तक कि शिवपुराण में स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥4-7॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥4-8॥

इस श्लोक का अर्थ है.... परमात्मा कहते हैं कि... मैं अवतार लेता हूं। मैं प्रकट होता हूं। जब-जब धर्म की हानि होती है, तब तब मैं आता हूं। जब-जब अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूं। मैं सज्जन लोगों की रक्षा, दुष्टों के विनाश, धर्म की स्थापना के लिए युग-युग में प्रकट होता हूं। श्रीमदभगवत गीता के चौथे अध्याय का ये सातवां और आठवां श्लोक परमात्मा के अवतरण का सूचक है। वर्तमान समय में धर्मग्लानि के सभी चिंह्न दिख रहे हैं। मनुष्य और मनुष्यता इतने निम्म स्तर पर पहुंच चुकी है जिसका जिक्र शास्त्रों में भी नहीं किया गया है। सतयुग, त्रेतायुग में धर्म अपनी श्रेष्ठ स्थिति में होता है। द्वापरयुग से धर्मग्लानि प्रारंभ होती है परंतु वह परमात्मा के अवतरण का समय नहीं होता है। कलियुग में धर्म की अति ग्लानि होती है और मानवता का पतन हो जाता है। जिसके उत्थान का कार्य परमात्मा के सिवाए और कोई नहीं कर सकता है। परमात्मा का अवतरण धर्म की स्थापना के लिए होता है। इसलिए कलियुग के अंत में जब अधर्म बढ़ जाता है, तभी परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है और पुनः सतयुग की स्थापना होती है।

परमात्मा की पहचान के लिए मुख्य पांच बातें

- **सर्वमान्य:** परमात्मा एक और सत्य है। परमात्मा उन्हें कहा जाएगा जो सर्वमान्य हों और सभी धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें। वह सर्व धर्मों की आत्माओं के परमपिता हैं। उन्हें अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से याद किया जाता है। जैसे- परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि उसके ही नाम हैं।
- **सर्वोच्च:** परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम और परम हों यानी उसके ऊपर कोई नहीं हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है। बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परमशिक्षक, परम सद् गुरु और परम रक्षक हैं।
- **सबसे न्यारा:** परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख- दुःख से न्यारे और सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त हैं।
- **सर्वज्ञ:** परमात्मा ही सर्वज्ञ अर्थात् इस सृष्टि का आदि-अंत जानते हैं। वही रचनाकार और पालनहार हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति के दाता हैं। तीनों लोगों के स्वामी त्रिलोकीनाथ,त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हैं।
- **शक्तियों का भंडार:** परमात्मा सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हैं। वह सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को विश्व की सर्व आत्माओं को देकर उनका कल्याण करते हैं।

महापुरुषों के संग से एक दिन हमारे जीवन में भी विचारों की पवित्रता आ जाती है। यहां आकर शांति और विशेष प्रकार का प्यार मिला जिसे पाकर हमें लगता है, जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुंच गए हैं। यहां जितने भी ब्रह्माकुमार भाई-बहिन मिले, उनकी वाणी व व्यवहार में दिव्यता और सत्यता झलकती है। यहां का दिव्य वातावरण आनंददायक और शांतिपूर्ण है। हम जैसा अन्न खाते हैं, वैसा मन होता और वैसे ही विचार आते हैं।

- परम संत हुजूर कंवर साहेब महाराज, प्रमुख, संत राधा स्वामी सत्संग, हरियाणा

भगवान शिव वह ब्रह्मा द्वारा इस सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा विनाश का कार्य कराते हैं। हम देखते हैं की यह तीनों देवता हमेशा तपस्या में लीन दिखाए गए हैं। इसका मतलब है कि इनके ऊपर भी कोई शक्ति है जिसकी याद में यह देवतागण सदा मग्न रहते हैं। वह परम शक्ति निराकार, ज्योतिर्बिंदु परमपिता शिव परमात्मा हैं। ब्रह्माकुमारीज़ कहीं भी वैदिक धर्म के विपरीत नहीं चलते हैं।

- आचार्य महामंडलेश्वर संत कमल किशोर सागर महाराज,सहारनपुर, उप्र

धरती पर यदि कहीं स्वर्ग उतारा है तो शिव बाबा ने उतारा है। इन ब्रह्माकुमारी बहनों ने उतारा है। स्वर्ग में देवी-देवता होते हैं, ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का आचरण और दिव्य जीवन देवी-देवताओं से कम नहीं है। यदि जीवन जीने की कला कहीं सिखाई जा रही तो वह ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाई जा रही है। एक बार आबू के बाबू के काबू में जो आ गया तो उसके जीवन का उद्धार हो जाता है।

- महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, हरि मंदिर आश्रम, संस्कृत महाविद्यालय, पटौदी, हरियाणा

हमारे उपनिषदों में कहा गया है कि कण-कण ईश्वर से है, लेकिन लोगों ने उल्टा कर दिया है कि कण-कण में ईश्वर हैं। दोनों बातों में जमीन-आसमान का अंतर है। ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् अर्थात कण-कण ईश्वर से बना है, ईश्वर से ही सब निर्मित है। ईश्वर अपनी ईथर एनर्जी से इस संसार को चला रहे हैं। चूंकि लोगों में इतनी भ्रांतियां हो गईं हैं कि कण-कण में ईश्वर है इससे बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। जरुरत है तो लोगों को अपने धर्मग्रंथ पढ़ने होंगे।

- आचार्य परमानंद महाराज, सतना, मप्र

गीता: मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

परमात्मा ने श्रीमद्भगवद गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते हैं। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं। जो परमात्मा के दिव्य अवतरण को पहचान नहीं पाते हैं।

महाभारत: ज्योति ने की नवयुग की स्थापना

महाभारत में भी लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। उन्हें ज्ञान देकर अपने जैसे अन्य दिव्य आत्माओं को तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी।

मनुस्मृति: जो तेजस्वी और प्रकाशमान है

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिवपुराण में धर्मसंहिता में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ।

रामायण- में लिखा है कि बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुंह के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

यजुर्वेद- यजुर्वेद (32/2) का वचन है कि सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युत पुरूषाधि, अर्थात् वह विद्युत पुरूष ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जिससे निमेष जज्ञिरे विद्युत पूरूषादधि अर्थात् वह विद्युत पुरूष प्रगट हुआ जिससे निमेष कला का आदि का प्रारम्भ हुआ। दुनिया के सभी धर्म, ग्रंथों और शास्त्रों में एक परमात्मा की ही महिमा गाई गई है।

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमसत्ता निराकार परमात्मा की सत्ता स्वीकारी है

सभी धर्मों के मूल हैं ज्योतिर्बिंदु परमात्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की महिमा गाई है और उस परमसत्ता को स्वीकारा है। मान्यता है कि भारत देश 33 करोड़ देवी-देवताओं का देश है। परन्तु इन सभी देवताओं को बनाने वाले एक ही परमपिता परमात्मा शिव हैं। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता हैं। ज्ञान, गुण, शांति, शक्ति, प्रेम, सुख और आनंद के सागर हैं। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमधाम के निवासी हैं। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं हैं। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं है, बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया है।

शिव का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं। वह मनुष्य आत्माओं को सच्चा गीता ज्ञान देकर और सहज राजयोग की शिक्षा देकर आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। साथ ही कल्पानुसार नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करते हैं।

शंकरजी के भी परमपिता परमात्मा हैं 'शिव'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिंह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवी-देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर, परमात्मा शिव की रचना हैं। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है।

यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे।

कहां है परमात्मा शिव का निवास स्थान?

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक हैं- स्थूल लोक, सूक्ष्म लोक और ब्रह्मलोक (परमधाम)। परमात्मा परमधाम के निवासी हैं।

स्थूल लोक... : मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना- परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर पांच हजार वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्मलोक... : सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। उस लोक में पहले ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

ब्रह्मलोक... : सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ब्रह्मतत्व या ब्रह्मलोक कहते हैं। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमात्मा और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लाखों लोगों को मिला जीवन का लक्ष्य

राजयोग साधना से लाखों लोग बने परमात्म मिलन के साक्षी

- **1937 में हुई ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना**
- 1970 में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत
- **06 हजार सेवाकेंद्र विश्वभर में संचालित**
- 140 देशों में राजयोग का दिया जा रहा संदेश
- **46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित**
- 22 लाख लोग विद्यालय के विद्यार्थी
- **20 प्रभागों से समाज के सभी वर्गों की सेवा**

1950 में मात्र 350 भाई-बहनों के साथ हुई शुरुआत

1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें साथ थे। 1950 में एक ट्रस्ट बनाकर ओम मंडली का नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा गया। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) को नियुक्त किया गया। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह नारा लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। आज ब्रह्माकुमारीज़ के भारत सहित पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब छह हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से परमात्म संदेश दिया जा रहा है।

कैसी होगी स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर और हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहेगा। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होंगे। संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। देवी-देवता सर्व गुणों, शक्तियों और सर्व कलाओं से संपन्न होंगे। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय-शेर एक घाट में पानी पीते हैं।

14 वर्ष ज्ञान-योग की भट्टी में तपाया...

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए भाई-बहनों को 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराईं। ज्ञान और योग की भट्टी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है। इसी तपस्या का परिणाम है कि पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड के खिताब से नवाजा गया था। वह 60 वर्ष की उम्र में विदेश की सरजमीं पर पहुंचीं और अकेले 80 देशों में अध्यात्म का परचम फहराया।

नारी को ताज देकर शक्ति स्वरूपा बनाया...

दादा ने विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य की जब नींव रखी तब नारी की समाज में दशा ठीक नहीं थी। चूंकि परमात्मा को भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ भी करना था। नारी को शक्ति स्वरुपा के ताज से सुशोभित करने के लिए ओम मंडली नाम से संगठन बनाया। इसमें सारा दायित्व संचालन से लेकर ज्ञान अमृत देने की जिम्मेदारी नारी शक्ति को सौंपी। बाबा की विराट सोच ही थी कि नारी को विश्व शांति और युग परिवर्तन का कलश सौंपकर उनका हर पल मार्गदर्शन किया। परमात्मा ने दादा को दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, जिन्हें हम सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहते हैं।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के विचार से विश्वभर में आई क्रांति

शिव आमंत्रण, आबू रोड

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामर्थ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज अध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरो कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का यह विचार और नारा आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। आत्मा का परमात्मा से महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं। लाखों लोगों का जीवन पूरी तरह से बदल गया है।

हीरो के जौहरी से विश्व शांति के मसीहा का सफर...

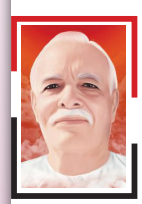

सन् 1937 की बात है। हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध जौहरी दादा लेखराज की जिंदगी सुख-शांतिमय चल रही थी। लेकिन परमात्मा को पाने की दिल में इतनी प्रबल इच्छा शक्ति और उत्कंठा थी कि उन्होंने अपने जीवन में 12 गुरु बनाए थे। वह गुरु की आज्ञा को भगवान की आज्ञा मानते थे। दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं की थी। इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। वह जब घर पहुंचे और एक दिन कमरे में बैठे थे, तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि- **निजानन्द् स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्**। इस परिचय के साथ परमपिता परमात्मा ने आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमात्मा के स्वर्णिम दुनिया बनाने का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

क्या है राजयोग मेडिटेशन...

राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमात्मा शिव को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं उनका मन ही मन-बुद्धि द्वारा विजुलाइज करके आत्म स्वरुप में स्थित होने का अभ्यास करते हैं। राजयोग अंतर्जगत की यात्रा है। जब नियमित तौर पर राजयोग ध्यान में महान संकल्पों करते हुए परमात्मा की दिव्य शक्तियों को बुद्धि द्वारा मन की आंखों से विजुलाइज करते हैं तो आत्मा का स्वरुप, संस्कार और विचार उसी रुप में ढलने लगते हैं। राजयोग ध्यान मन-बुद्धि और आत्मा का भोजन है। राजयोग से आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाती है। अष्ट शक्तियां जागृत हो जाती हैं। बुद्धि, दिव्य बुद्धि और संस्कार दिव्य संस्कार बन जाते हैं। मन श्रेष्ठ और शुभ विचारों से संपन्न हो जाता है।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

पत्र-व्यवहार का पता-
संपादक ▸ ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 8740060231, 9471854331

• प्रकाशक व मुद्रक : करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित • संपादक ब्र.कु. कोमल
• संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र • RNI No.: RAJHIN/2013/53539
www.shivamantran.com
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
Madhuban news
Youtube- https://www.youtube.com/c/madhubannews